२१. सामूहिक जीवन के लिए सार्वजनिक प्रबंध

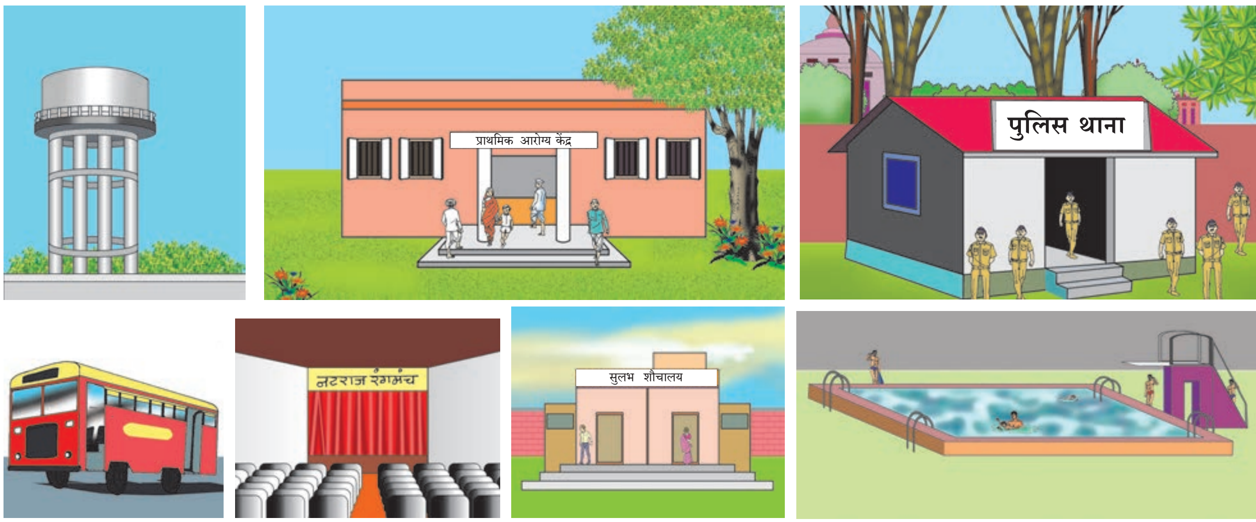

सार्वजनिक प्रबंध और सुविधाएँ

बताओ तो

- ऊपरवाले चित्रों के आधार पर सार्वजनिक प्रबंध तथा सुविधाओं की एक सूची तैयार करो । इन सुविधाओं से हमें कौन-सा लाभ होता है ?
- यदि ये सुविधाएँ न हों तो कौन-सी कठिनाइयाँ उत्पन्न होंगी ?

अपना परिवार ही अपना घर होता है । घर के बाहर हमारा जीवन सार्वजनिक बन जाता है । सार्वजनिक जीवन में विभिन्न सुविधाओं की आवश्यकता होती है । सार्वजनिक सुविधा का अर्थ हम सब लोगों के लिए किए गए प्रबंध या व्यवस्थाएँ हैं । हम सार्वजनिक जीवन में परिवहन, पाठशाला, दवाखाना जैसी सुविधाओं का उपयोग करते हैं । सार्वजनिक सेवाएँ तथा सुविधाएँ सभी लोगों के लिए समान रूप में उपलब्ध होती हैं । उनका उपयोग हम लोगों को जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए ।

स्थानीय शासन संस्थाएँ और गाँव की सुविधा

हममें से कुछ लोग गाँवों तथा कुछ लोग शहरों में रहते हैं । गाँवों की जनसंख्या प्राय: कम होती है । शहरों की जनसंख्या अधिक होती है । शहर में कारखाने होते हैं । बाजार होते हैं । वहाँ रोजगार के अवसर अधिक होते हैं । शहर में सार्वजनिक सुविधाएँ बड़ी मात्रा में उपलब्ध होती हैं ।

चाहे गाँव हो या शहर, वहाँ का प्रशासन वहाँ की शासन संस्था चलाती है । उसे ही हम स्थानीय शासन संस्था (सरकारी तंत्र) कहते हैं ।

गाँव का प्रशासन ग्राम पंचायत चलाती है ।

नगर का प्रशासन नगरपालिका चलाती है ।

बड़े शहरों के प्रशासन के लिए महानगरपालिकाएँ होती हैं ।

इनमें से तुम्हारे गाँव अथवा शहर में कौन-सी स्थानीय शासन संस्था है ?

क्या तुम जानते हो

प्रत्येक गाँव के लिए एक ग्राम पंचायत होती है । १ मई १९६० के दिन महाराष्ट्र राज्य का निर्माण हुआ। उस समय महाराष्ट्र में कुल २१,६३६ ग्राम पंचायतें थीं । २०१० के अंत में यह संख्या बढ़कर २७,९९३ हो गई । ग्राम पंचायत की स्थापना होने के लिए संबंधित गाँव की जनसंख्या ५०० होना आवश्यक है । जनसंख्या ५०० से कम होने पर दो-तीन गाँवों को मिलाकर एक सामूहिक ग्राम पंचायत बनती है ।

करके देखो

यह स्थानीय शासन संस्था तुम्हारे परिसर में कौन-सी सेवाएँ प्रदान करती है; इसकी सूची बनाओ ।

पिता के साथ बैंक जाती हुई लड़की

अंतर्देशीय पत्र निहारती हुई लड़की

सहकारी संस्था-सूत मिल

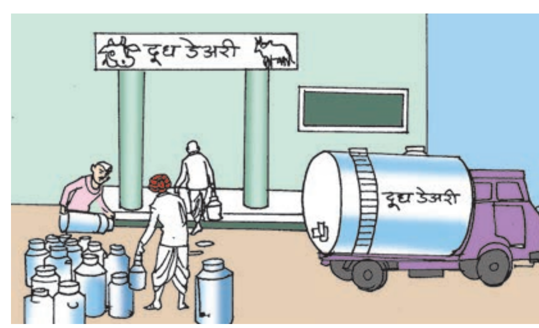

दूध डेयरी

बताओ तो

हमारे द्‌वारा दिए गए कर की राशि (रुपयों) में से ही हमें सार्वजनिक सुविधाएँ या सेवाएँ दी जाती हैं । हमें उनका सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिए । ऐसा न करने पर सार्वजनिक सेवा-सुविधाओं पर दबाव पड़ता है परंतु हम सब मिलकर इन समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकते हैं ।

स्थानीय संस्था जल की पूर्ति तथा सार्वजनिक स्वच्छता इत्यादि सेवाएँ देती है । परंतु हमारी आवश्यकता तो उससे भी अधिक सेवाओं की होती है । अपने गाँव में शायद तुमने बैंक देखा होगा। हमारे माता-पिता खर्च के बाद बचे हुए धन को बैंक में जमा करते हैं । वहाँ पैसे सुरक्षित रहते हैं । पैसों की बचत होती है । आवश्यकता पड़ने पर हम उसे बैंक से निकाल सकते हैं । जिन्हें आवश्यकता हो, उन्हें बैंक कर्ज भी देता है ।

रिश्तेदारों और मित्रों-सहेलियों के साथ संपर्क स्थापित करने के लिए डाकसेवा का उपयोग किया जाता है । पूरे विश्व में हम कहीं भी पत्र भेज सकते हैं ।

कभी-कभी एक ही परिसर के कुछ लोग एकत्र होते हैं । हमारी स्थानीय आवश्यकताएँ कौन-सी हैं, उन्हें खोजते हैं । एक-दूसरे के सहयोग द्वारा कौन-सा उद्योग अथवा व्यवसाय करना है, यह निश्चित करते हैं । उस उद्योग/व्यवसाय को प्रारंभ करने हेतु अपना थोड़ा-थोड़ा धन एकत्र करते हैं । उस उद्योग या व्यवसाय से होने वाले लाभ को आपस में बाँट लेते हैं । लोगों के पारस्परिक सहयोग द्वारा स्थापित की गई ऐसी संस्थाओं को सहकारी संस्था कहते हैं ।

क्या तुम जानते हो

लगभग चार सौ वर्ष पहले एक डाक व्यवस्था निम्नानुसार थी :

गोवलकोंडा नामक स्थान पर प्रत्येक दो-तीन मील की दूरी पर छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ थीं । पहली झोंपड़ी में एक पत्रवाहक रहता था । पत्रवाहक का अर्थ है – डाक लेकर जाने वाला व्यक्ति । पहला पत्रवाहक पहली झोंपड़ी की पूरी डाक का थैला लेकर दूसरी झोंपड़ी में डाल देता था। वहाँ दूसरा पत्रवाहक थैला लेने के लिए तैयार रहता था । वह पत्रवाहक उस थैले को तुरंत उठाकर दौड़ते हुए अगली झोंपड़ी में डाल देता था ।

डाक ले जाने की व्यवस्था इस विधि से की जाती थी । ऐसी व्यवस्था को ही 'डाक व्यवस्था' कहते हैं ।

अब क्या करना चाहिए

नलों में टोंटी न होने से पानी बेकार जाता है ।

इस समस्या के समाधान के लिए अकोले तहसील की बहिरटवाड़ी की एक पाठशाला की बाल संसद ने एक उपक्रम चलाया । कक्षा में 'पानी की बचत' विषय पर चर्चा प्रारंभ की गई । कुछ विद्यार्थियों ने यह विषय रखा कि गाँव के नलों में टोंटी न लगी होने के कारण पानी व्यर्थ बह जाता है। विद्यार्थियों ने यह पता लगाया कि नलों में टोंटियाँ लगाने का काम किसका है। इसके बाद उस बाल संसद ने ग्राम पंचायत से नलों में टोटियाँ लगवाने का आग्रह किया। बाल संसद ने ग्राम पंचायत को नलों में टोंटी लगाने के विषय में पत्र लिखा । कुछ दिनों बाद बाल संसद ने एक स्मरण पत्र भी भेजा । कुछ और दिनों बाद नलों में टोंटियाँ लगवा दी गईं। इस प्रकार विद्यार्थियों ने इस समस्या का समाधान किया ।

✽ **पानी से संबंधित समस्या का निराकरण तुम कैसे करोगे ?**

हमने क्या सीखा

- ✽ सार्वजनिक सुविधा का अर्थ है – हम सब लोगों के लिए दी गईं सेवाएँ ।
- ✽ गाँव का प्रशासन ग्राम पंचायत देखती है ।
- ✽ नगर का प्रशासन नगरपालिका देखती है ।

* बड़े शहरों के प्रशासन के लिए महानगरपालिकाएँ होती हैं ।
* सार्वजनिक सेवा-सुविधाओं का उपयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए ।
* बैंकों में हमारे पैसे सुरक्षित रहते हैं ।
* हम पूरे विश्व में कहीं भी पत्र भेज सकते हैं ।
* लोगों के पारस्परिक सहयोग द्वारा निर्मित संस्था को सहकारी संस्था कहते हैं ।

स्वाध्याय

(अ) नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(१) सार्वजनिक सुविधा का क्या अर्थ है ?

(२) सार्वजनिक जीवन में हम किन सुविधाओं का उपयोग करते हैं ?

(३) स्थानीय शासन संस्था कौन-कौन-सी सेवाएँ देती हैं ?

(आ) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(१) जिन्हें आवश्यकता होती है, ... उन लोगों को कर्ज भी देता है ।

(२) रिश्तेदारों तथा मित्रों-सहेलियों से संपर्क स्थापित करने के लिए ..... का उपयोग किया जाता है ।

(३) लोगों के पारस्परिक सहयोग द्वारा निर्मित संस्थाओं को .... संस्था कहते हैं ।

(इ) दिए गए सांकेतिक वाक्यों के आधार पर तालिका शब्द पूर्ण करो :

(१) गाँव का प्रशासन देखती है ।		म		चा		त		
(२) नगर का प्रशासन देखती है ।	न		र		लि			
(३) बड़े शहरों के लिए होती है ।		हा		ग		पा		का

उपक्रम

● अपने अभिभावक की सहायता से बैंक में अपना खाता खोलो । अपने जेबखर्च के पैसों में से बचे हुए पैसे बैंक में जमा करो ।

HRUNGU

***